12.08.2018 की अव्यक्त मुरली से
प्रश्नोत्तरी और स्वमान

भिखारी नहीं, सदा के अधिकारी बनो

(Rev. 27-12-83)

प्रश्न - आज विश्व रचता बाप कैसे और कहां पहुंचे गये हैं ?
उत्तर - विश्व की परिक्रमा लगाते हुए अपने मिलन स्थान पर बच्चों की रूहानी महफिल में पहुँच गये हैं।

प्रश्न - विश्व-परिक्रमा में क्या-क्या देखा?
उत्तर - दाता के बच्चे सर्व आत्माएँ भिखारी के रूप में भीख मांग रही हैं।
कोई रायल भिखारी,
कोई साधारण भिखारी।

प्रश्न - सभी के मुख में वा मन में कौन सा आवाज़ सुनाई देता था?
उत्तर - यह दे दो-यह दे दो का आवाज़।

प्रश्न - कौन-कौन से भिखारी हैं?
उत्तर - कोई धन के भिखारी,
कोई सहयोग के भिखारी,
कोई सम्बन्ध के भिखारी,
कोई थोड़े समय के लिए सुख-चैन के भिखारी,
कोई आराम वा नींद के भिखारी,
कोई मुक्ति के भिखारी,
कोई दर्शन के भिखारी,
कोई मृत्यु के भिखारी,
कोई फालोअर्स के भिखारी।

प्रश्न - भिखारी यह दो... यह दो की भीख किस्से माँग रहे हैं?
उत्तर - बाप से, महान आत्माओं से, देव आत्माओं से और साकार सम्बन्ध वाली आत्माओं से।

प्रश्न - बाप कौन सी दुनिया देख, स्वराज्य अधिकारियों की महफिल में आए पहुँचे हैं।
उत्तर - बेगर्स की दुनिया।

प्रश्न - बेगर से दाता के बच्चे बन गये अर्थात् क्या बन गये?
उत्तर - मास्टर वा अधिकारी बन गये।

प्रश्न - "यह दो-यह दो", संकल्प में भी कौन भीख नहीं मांगते?
उत्तर - अधिकारी।

प्रश्न - भिखारी का शब्द क्या है?
उत्तर -'दे दो'।

प्रश्न - अधिकारी का शब्द क्या है?
उत्तर - सब अधिकार हैं। ऐसी अधिकारी आत्माएँ बने हो ना!

प्रश्न - दाता बाप ने क्या किया है?
उत्तर - बिना माँगे, सर्व अविनाशी प्राप्ति का अधिकार स्वत: ही दे दिया।

प्रश्न - आप सबने एक शब्द का संकल्प किया, मेरा बाबा और बाप ने क्या किया?
उत्तर - एक ही शब्द में कहा सर्व खज़ानों का संसार तेरा।

प्रश्न - एक ही संकल्प वा बोल अधिकारी बनाने के क्या बना?
उत्तर - निमित्त बना।

प्रश्न - कौन से दोनों शब्द चक्र में भी फँसाते हैं और सर्व विनाशी दु:खमय चक्र से छुड़ाये सर्व प्राप्तयों के अधिकारी भी बनाते हैं?
उत्तर - मेरा और तेरा।

प्रश्न - आपने अनेक चक्र से छूट कर क्या ले लिया?
उत्तर - एक स्वदर्शन चक्र ले लिया अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी बन गये।

प्रश्न -तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क के चक्र में फँसने का कारण क्या है?
उत्तर - स्वदर्शन चक्र को छोड़ देते हो।

प्रश्न - सदा एक अंगुली पर क्या दिखाते हैं?
उत्तर - स्वदर्शन चक्र।

प्रश्न - एक अंगुली अर्थात् क्या?
उत्तर - एक ही संकल्प -''मैं बाप का और बाप मेरा''।

प्रश्न - संकल्प रूपी एक अंगुली पर क्या चलता है?
उत्तर - स्वदर्शन चक्र।

प्रश्न - अनेक चक्करों में कैसे फँसते हो?
उत्तर - एक को छोड़ अनेक संकल्पों में जाने से।

प्रश्न - स्वदर्शन-चक्रधारी अर्थात् क्या?
उत्तर - स्व का दर्शन करना और सदा के लिए प्रसन्नचित्त रहना।

प्रश्न - स्वदर्शन नहीं तो क्या हो जाता है?
उत्तर - प्रसन्नचित्त के बजाए प्रश्नचित्त हो जाता।

प्रश्न - प्रसन्नचित्त अर्थात् क्या?
उत्तर -जहाँ कोई प्रश्न नहीं।

प्रश्न - सदा स्वदर्शन द्वारा प्रसन्नचित्त अर्थात् क्या?
उत्तर - सर्व प्राप्ति के अधिकारी। स्वप्न में भी बाप के आगे भिखारी रूप नहीं। यह काम कर लो या करा लो। यह अनुभव करा लो, यह विघ्न मिटा लो।

प्रश्न - मास्टर दाता की दरबार में कोई क्या नहीं हो सकती है?
उत्तर - अप्राप्ति।

प्रश्न - अविनाशी स्वराज्य अर्थात क्या?
उत्तर - ऐसा राज्य जहाँ सर्व खज़ानों के भण्डार भरपूर हैं।

"आपके संकल्प से सोचने से पदमगुणा ज्यादा बाप स्वयं ही देते हैं।"

प्रश्न - अधिकारी किसको कहा जाता है?
उत्तर - संकल्प में भी भिखारीपन नहीं। इसको कहा जाता है - 'अधिकारी।

प्रश्न - गीत कौन सा गाते हो?
उत्तर - सब कुछ पा लिया - यही गीत गाते हो ना! वा अभी यह पाना है, पाना है यह फरियाद के गीत गाते हो।

प्रश्न - जहाँ याद है वहाँ क्या नहीं?
उत्तर - फरियाद।

प्रश्न - कभी-कभी राज्य अधिकारी की स्थिति की ड्रेस बदलकर कौन सी ड्रेस धारण तो नहीं कर लेते हो?
उत्तर - माँगने वाली भिखारी की स्थिति की पुरानी ड्रेस।

प्रश्न - ड्रेस संस्कार रूपी पेटी में.....तो नहीं रखी है।
उत्तर - छिपाकर।

प्रश्न - पेटी सहित स्थिति रूपी ड्रेस को जला दिया है वा ..... के लिए किनारे कर रख लिया है?
उत्तर - आईवेल।

प्रश्न - पंजाब वाले किसमें होशियार हैं?
उत्तर - रंग चढ़ाने में।

प्रश्न - राजस्थान वाले क्या हैं?
उत्तर - राज्य अधिकारी। अधीनता के संस्कार वाले नहीं।

प्रश्न - इन्दौर वाले कौन हैं?
उत्तर - सदा माया के प्रभाव से परे - इन डोर।

प्रश्न - अन्दर रहने वाले अर्थात् क्या?
उत्तर - सदा बाप की छत्रछाया के अन्दर रहने वाले मायाजीत।

प्रश्न - महाराष्ट्र अर्थात् क्या?
उत्तर - महान आत्मा। सबमें महान। संकल्प बोल, कर्म, तीनों महा महान हैं।

प्रश्न - महान आत्मायें अर्थात् क्या?
उत्तर - सम्पन्न आत्मायें।

प्रश्न - नदियों और सागर का मिलन कहां पर हो रहा है?
उत्तर - मधुबन के तट पर।

याद प्यार नमस्ते
"सदा स्वराज्य अधिकारी, स्वदर्शन चक्रधारी सदा प्रसन्नचित्त रहने वाले, सर्व खज़ानों से भरपूर महान आत्माएं, भिखारीपन को स्वप्न से भी समाप्त करने वाले, ऐसे दाता के मालामाल बच्चों को अविनाशी बापदादा की "अमर भव" की सदा सम्पन्न स्वरूप की याद प्यार और नमस्ते।"

प्रश्न-विजय नहीं होने का कारण क्या है?
उत्तर - निश्चय में कहाँ न कहाँ कमी है।

प्रश्न - माया किसको हिला नहीं सकती?
उत्तर - निश्चय बुद्धि को।

प्रश्न - कर्म रूपी बिल्डिंग अचल कब होगी?
उत्तर - जब निश्चय का फाउन्डेशन अचल होगा।

प्रश्न - जिसको पता है कि इस रीति से माया आती है, तो वह कैसे रहेंगें?
उत्तर - सदा सेफ रहेंगे ना।

प्रश्न - कौन सी स्मृति से समर्थ बन आगे बढ़ते चलो?
उत्तर - सदा विजयी रत्न हैं, कल्प-कल्प के विजयी हैं की स्मृति से।

प्रश्न - चिड़ियायें किसको खा जाती हैं?
उत्तर - कच्चे पत्तों को।

प्रश्न - पक्के बन जायेंगे तो क्या होगा?
उत्तर - माया रूपी चिड़िया खायेगी नहीं। सेफ रहेंगे।

प्रश्न - विश्व में शान्ति स्थापन कौन कर सकते हैं?
उत्तर - जो स्वयं शान्त स्वरूप हैं।

स्वमान :-

- ❖ मैं वैल्युएबल सच्चा चन्दन हूं।
- ❖ मैं चन्दन के समान खुशबू देने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूं।
- ❖ मैं सदा बाप के साथ रहने वाली आत्मा हूं।
- ❖ मैं विश्व के आगे अमूल्य रत्न हूं।
- ❖ मैं वैल्युएबल ज्ञान सितारा हूं।
- ❖ मैं भगवान का साथी हूं।

❖ मैं बाप के साथ रहने वाली नामीग्रामी आत्मा हूं।

❖ मैं पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा हूं।

❖ मैं योगी जीवन वाला अर्थात् निरन्तर योगी हूं।

❖ खाते- पीते, चलते-फिरते बाप और मैं श्रेष्ठ आत्मा की स्मृति स्वरूप हूं।

❖ मैं सदा एक लगन में मगन रहने वाला योगी हूं।

❖ मैं सर्व प्राप्ति हर्षितमुख आत्मा हूं।

❖ मैं दु:ख के संसार की आकर्षण से सदा मुक्त आत्मा हूं।

❖ मैं वरदानों के युग में पार्ट बजाने वाली सदा वरदानी आत्मा हूं।

❖ मैं मेहनत मुक्त वरदानी आत्मा हूं।

❖ मैं वरदाता बाप का बच्चा "अविनाशी भव" की वरदानी आत्मा हूं।

❖ मैं सदा एकरस स्थिति में रहने वाली वरदानी आत्मा हूं।

❖ मैं सदा ऊँची स्थिति में रहने वाली महान आत्मा हूं।

❖ मैं हर संकल्प, हर बोल और हर कर्म में विशेष आत्मा हूं।

❖ मैं अनेक आत्माओं की विशेष प्रेरणामूर्त हूं।

❖ मैं साधारण दुनिया में रहते हुए न्यारा और बाप का प्यारा हूं।

❖ मैं औरों को कीचड़ से निकालने वाली कमल पुष्प समान आत्मा हूं।

❖ मैं सदा निश्चय बुद्धि विजयी रत्न हूं।

❖ मैं सदा शान्ति के सागर की सन्तान शान्त स्वरूप आत्मा हूं।

❖ मैं विश्व में शान्ति स्थापन करने वाली आत्मा हूं।

❖ मैं शान्ति के सागर बाप की विशेष सहयोगी आत्मा हूं।

❖ मैं शान्ति की देवी, शान्ति देवा हूं।

❖ मैं शान्ति देने के कार्य में सदा बिजी रहने वाली मायाजीत आत्मा हूं।।

वरदान - अमृतवेले के महत्व को जान महान बनने वाले विशेष सेवाधारी भव

- सेवाधारी अर्थात् आंख खुले और सदा बाप के साथ बाप के समान स्थिति का अनुभव करें।
- जो विशेष वरदान के समय को जानते हैं और वरदानों का अनुभव करते हैं वही विशेष सेवाधारी हैं।
- अगर यह अनुभव नहीं तो साधारण सेवाधारी हुए, विशेष नहीं।
- जिसे अमृतवेले का, संकल्प का, समय का और सेवा का महत्व है ऐसे सर्व महत्व को जानने वाले महान बनते हैं और औरों को भी महत्व बतलाकर महान बनाते हैं।

स्लोगन - जीवन की महानता सत्यता की शक्ति है जिससे सर्व आत्मायें स्वत: झुकती हैं।